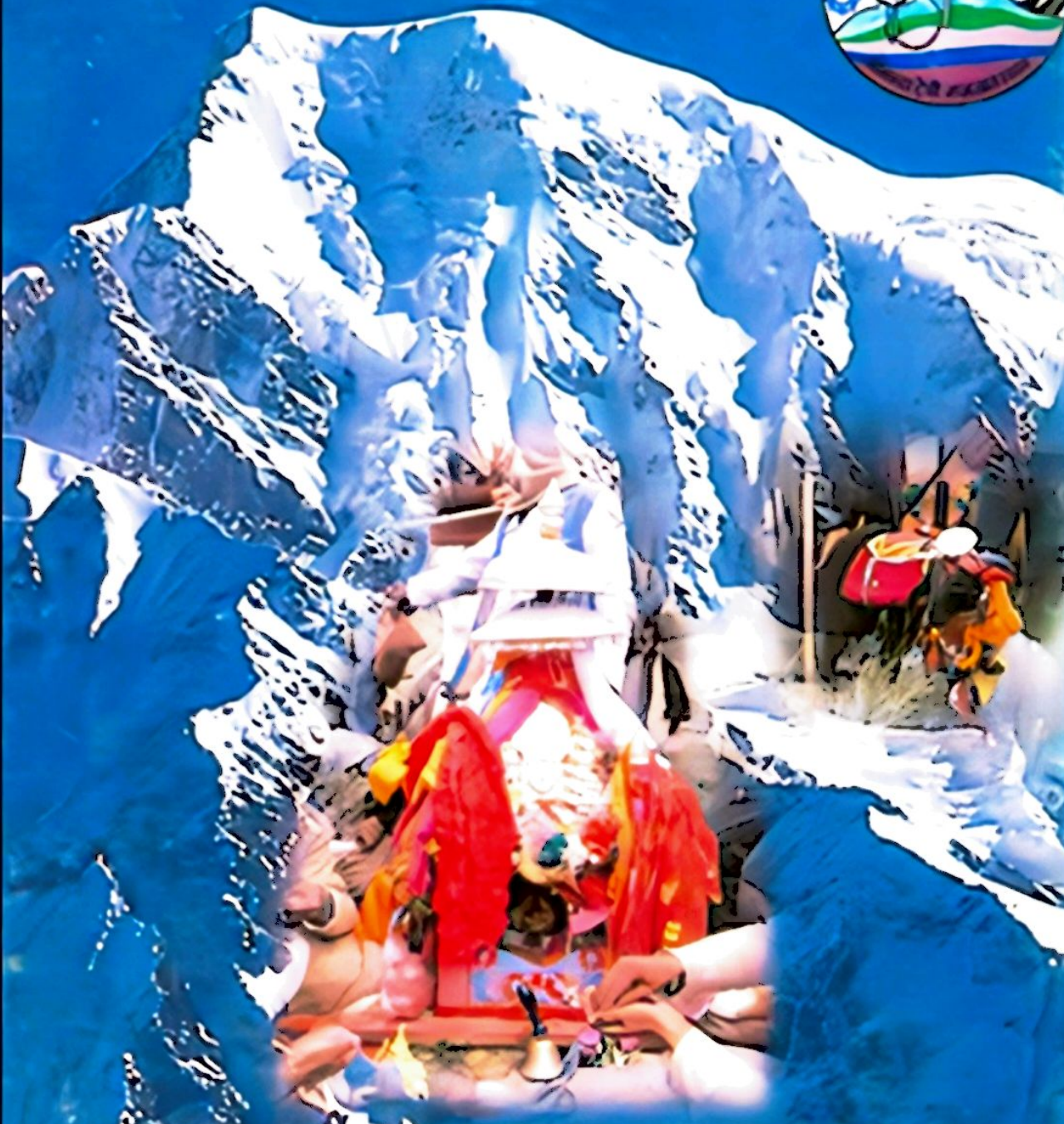




प्रकाशक एवं अकाधिकार
हिमालय भौत काव्यरत्न, ज्ञानपथ घमोली, लखनऊ
प्रकाशक के सम्पर्क में २००८ की प्रथम संस्करण की इच्छा है।
अधिक जानकारी के लिए कृपया हिमालय यात्रा कोर्स कोर्स
www.himalayanyatra.com

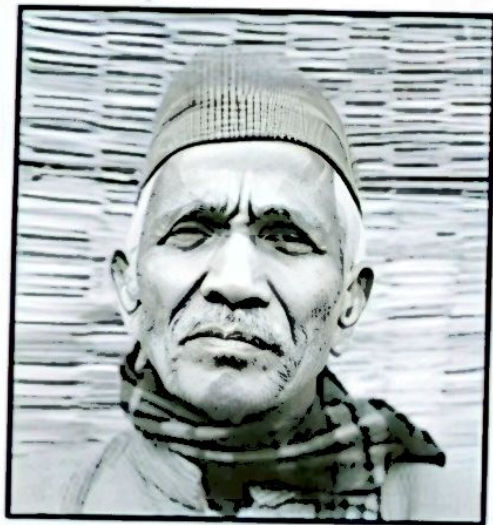
सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक-हिमालय का महाकुम्भ

श्री नन्दादेवी राजजात-२०००



मध्य हिमालय के उत्तराखण्ड क्षेत्र में महाकुम्भ स्तर पर आयोजित श्री नन्दादेवी राजजात-२००० के शुभारम्भ की पूर्व सन्ध्या पर २१ अगस्त को गढ़वाल के राजवंशी कुंवर गढ़वाल राज्य की प्रथम राजधानी चांदपुरगढ़ी के समीप अपने पैतृक गाँव काँसुवा से यात्रा के पथ प्रदर्शक चार सिंग के मेंढ़े व पवित्र रिगाल की राज छंतोली को लेकर उत्तराखण्ड के सुप्रसिद्ध सिद्धपीठ नन्दादेवी नौटी में भगवती की स्वर्ण प्रतिमा लेकर पहुँचेंगे। यहीं से दिनांक २२ अगस्त से ६ सितम्बर २००० तक की एक लम्बी साहसिक, ऐतिहासिक हिमालयी सांस्कृतिक यात्रा सम्पन्न होगी।

६वीं शताब्दी में चाँदपुरगढ़ी के राजा शालिपाल द्वारा प्रति बारहवें वर्ष भगवती नन्दादेवी को उनके मायके से ससुराल (कैलाश पति के निवास कैलाश अर्थात् त्रिशूली पर्वत) भेजने की यात्रा करने की परम्परा के साथ राजजात यात्रा का भी श्री गणेश किया गया जो आज भी परम्परागत रूप से उनके वंशज आयोजित करते आ रहे हैं। १६ पडावों व २८० किमी० की समुद्रतल से १७,५०० फीट की ऊँची ज्यूरागलीधार को पार करने वाली विश्व की यह सबसे दुर्गम व लम्बी यात्रा है।



यह पुस्तक
श्री नन्दादेवी राजजात को
महाकुम्भ स्तर पर आयोजित
करने की परिकल्पना लिए
संघर्षरत राजगुरु पंडित स्व०
देवराम नौटियाल
को समर्पित ।

श्रद्धांजली

जन्म — २३ मार्च १९०६, नौटी, चमोली गढ़वाल ।
मृत्यु — २३ जुलाई १९६८, नई दिल्ली ।
शिक्षा — हिन्दी (मिडिल)
कार्यक्षेत्र — बन्दोबस्त, लोक निर्माण विभाग, बद्रीनाथ मन्दिर
समिति आदि में सेवारत रहकर नौकरी छोड़ १९४८ से कर्णप्रयाग
में व्यापार प्रारम्भ । पत्रकारिता, जनसेवा, सहकारिता, क्षेत्रीय
विकास एवं समाज-सुधार कार्यों में समर्पित ।

नन्दा देवी राजजात सेवा :-

१९५१ से आजीवन श्री नन्दादेवी राजजात समिति के
महामंत्री पद पर रहकर नन्दादेवी राजजात को महाकुम्भ स्तर
पर आयोजन करने के लिए लगातार प्रयासरत रहे । तथा यात्रा
एवं पर्यटन के माध्यम से क्षेत्रीय विकास व आर्थिक सुधार की
परिकल्पना लिए सेवा करते रहे ।

हिमालय पीस फाउण्डेशन(रजि०)
गोपेश्वर (चमोली), उत्तरांचल, उ०प्र०
फोन: ०१३७२-५२६७८

सिद्धपीठ श्री नन्दादेवी नौटी का ऐतिहासिक महत्व

नन्दादेवी नौटी के पर्व व मेले-हरियाली पूड़ा

उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र में ऐसी परम्परा है कि चैत के महीने सम्पूर्ण समाज अपनी बेटियों (घर की वैवाहित कन्याओं) को आलू, कलेऊ, (उपहार) वस्त्र, मिठाई के रूप में देते हैं। नौटी गाँव के लोग नन्दादेवी को अपनी बहिन मानते हैं। प्रतिवर्ष चैत के महीने नौ गते नन्दादेवी की पूजा अर्चना करते हैं। इस दिन यहाँ पर स्थानीय मेला भी लगता है।

सारा

गर्भियों के दिनों बीमारी से बचाने के लिये नन्दादेवी के सहायक दूतों की पूजा की जाती है।

नन्दा नवमी-पाती

प्रतिवर्ष भादों के महीने नवमी के दिन नन्दायाती का त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

विजौण

भूमिदेवता ऊफराई देवी को नया अनाज चढ़ाने के लिये जेठ, आषाढ़, नौटी से उपराईठाक तक ऊफराई देवी की डोली यात्रा आयोजित की जाती है।

भैलेश्वर की पूजा

गर्भियों में सारा, विजौण के साथ-साथ भैलेश्वर महादेव की भी विशेष सामूहिक पूजा होती है। इसे भंडारा कहते हैं।

हित लाटू की पूजा

नन्दादेवी के सिद्धपीठ नौटी के क्षेत्र में प्रतिवर्ष हित व लाटू देवता की भी विशेष पूजायें आयोजित की जाती है।

राजजात से पूर्व मौडिवी-

नौटी गाँव (५३२० फीट) के भूमि देवता ऊफराई देवी की राजजात से पूर्व बड़ी पूजा होती है, जिसे मौडिवी कहते हैं। गाँव की सभी विवाहित लड़कियों द्वारा देवी की विशेष पूजा की जाती है। नौटी से ५ किमी० ऊपर ऊफराईठांक (८५०० फीट) तक देवी की भव्य डोली यात्रा होती है, मध्य में मौडिवी स्थान पर देवी का प्रसाद पत्थरों को ऊपर रखकर प्राप्त किया जाता है। मौडिवी का अर्थ प्रत्येक परिवार से एक डिगची प्रसाद से है। नौटी में प्राप्त अभिलेखों के अनुसार पहली बार मौडिवी १६४८ में हुई तथा सन् १७६७, १८१७, १८४३, १८७३, १९२२, १९४८, १९६३, १९८०, १९८६ में मौडिवी होने के प्रमाण हैं।

राजजात की मनौती और चौसिंगिया खाडू-



मौडिवी के बाद कांसुवा के राजवंशी कुंवर नौटी आकर अपनी ईष्ट देवी राजराजेश्वर नन्दादेवी के पास राजजात की मनौती करते हैं। उसके बाद चौसिंगिया खाडू (चार सिंग वाला मेढ) इसी क्षेत्र में पैदा हो जाता है। नन्दादेवी के चौसिंगिया खाडू की पहचान यह है कि जिस गौशाला में वह जन्म लेता है उसमें उसी दिन से रात में नन्दादेवी का वाहक (बाघ) आने लगता है और वह तब तक आता रहता है जब तक चौसिंगिया खाडू का मालिक खाडू को अपनी भेंट पूजा सहित नन्दादेवी राजजात को अर्पित करने की मनौती नहीं रखता। चौसिंगिया खाडू को नन्दादेवी राजजात का अगवान (पथ प्रदर्शक) भी कहते हैं। नन्दादेवी के मायके (नौटी व कांसुवा) के लोग इसकी पीठ पर अपनी ईष्टदेवी के कपड़े आभूषण एवं पूजा का सामान लेकर नौटी से होमकुण्ड जाते हैं। होमकुण्ड में देवी की पूजा के बाद यह चौसिंगिया खाडू नन्दादेवी के अज्ञात कैलाश की ओर स्वयं ही चला जाता है। यह दैविक चमत्कार ही है कि इस वर्ष भी सन् १९८७ की यात्रा की भाँति कनखुल गाँव के चन्द्रसिंह दिष्ट की गौशाला में ही चार सिंग के मेढ ने शुभ जन्म लिया है।



नन्दादेवी का प्रतीक—स्वर्णप्रतिमा युक्त रिगाल की पवित्र राजछंतोली एवं श्री यत्र

राजगुरु नौटियालों द्वारा राजजात के कार्यक्रम की घोषणा राजवंशी कुंवरों की उपस्थिति व नेतृत्व में करने के बाद कांसुवा के राजवंशी कुंवर पवित्र रिगाल की राज छंतोली, (जिसका निर्माण आदिबद्री के समीप छिमटा गाँव के राजरूड़ियों द्वारा किया जाता है) चौसिंगिया खास व भगवती की स्वर्ण प्रतिमा लेकर नौटी पहुँचते हैं। नौटी में श्रीयत्र भूमिगत है, इसके ऊपर मन्दिर निर्माण का प्रावधान नहीं है। यही स्वर्ण प्रतिमा को प्राण प्रतिष्ठा देकर नौटी में पवित्र राजछंतोली में प्रतिष्ठित किया जाता है। चौसिंगिया भेटे के पथ-प्रदर्शन में पवित्र रिगाल की स्वर्ण प्रतिमायुक्त राजछंतोली का लेकर नौटी से राजवंशी व राजगुरु राजजात का शुभारम्भ करते हैं। नौटी से होमकुण्ड के लिए लाखाँ श्रद्धालु भक्त भगवती को मायके से ससुराल भेजने के लिए रल पड़ते हैं। मार्ग में २०० से अधिक देवी-देवताओं के निशान, छंतोली व डोलियाँ यात्रा में शामिल होती हैं।

बलिप्रथा का अन्त

नौटी गाँव व नन्दादेवी मन्दिर में नरबलि १८वीं शदी में बन्द हो गयी थी। उसके पश्चात वर्ष १८६८, १९०२, १९१८, १९२७, १९४०, १९४८, १९५१ में अन्य सभी प्रकार की बली प्रथा भी बन्द हो गई। सन् १९६८ की राजजात के सम्पूर्ण यात्रामार्ग व पड़ावों पर राजजात समिति के अध्यक्ष कुंवर रघुनाथ सिंह, महामंत्री देवराम नौटियाल, वधाण देवराजा के थाकदार, कुमदानन्द हटवाल पूर्व विधायक शेरसिंह दानू के सदप्रयास से बलिप्रथा पूर्ण रूप से बन्द हुई, फलस्वरूप ६०० बकरे व २५ भैंसों को जीवनदान मिला। सन् १९६६ और १९७० में सर्वोदय के पर्वतीय सम्मेलन, कर्णप्रयाग में श्री सुब्बाराव जी ने बलिप्रथा समाप्त करने के लिए राजजात समिति को सम्मानित भी किया।

श्री नन्दादेवी राजजात का ऐतिहासिक तथ्य और रूपकुण्ड रहस्य

सम्पूर्ण विश्व के अनेक अन्वेषक पुरातत्ववेत्ता, भूगर्भशास्त्री, इतिहासकार, वैज्ञानिक एवं नृवंशास्त्रीय वर्षों तक रूपकुण्ड रहस्य के शोध कार्य में व्यस्थ रहे। ऐतिहासिक, पौराणिक आधार पर कैलाश मानसरोवर के विश्व विख्यात भूगोलवेत्ता स्वामी प्रणवानन्द, एवं इन्द्रा गांधी राष्ट्रीय संग्रहालय के पूर्व निदेशक प्रोफेसर आर. एस. नैगी ने अपने अथक शोध के बाद रूपकुण्ड रहस्य का हल ढूँढ निकाला है।

रूपकुण्ड की उत्पत्ति (१६२०० फिट) :

जब भगवान शिव विवाह के बाद कैलाश (त्रिशूली) जा रहे थे, तो ज्यूरंगली की ढाल पर नन्दा को प्यास लगी, देवी ने शिवजी से पानी की याचना की, शिवजी ने चारों ओर दृष्टि डाली किन्तु कहीं पानी नजर नहीं आया। पास में ही भूमि नमीयुक्त देखकर शिवजी ने अपने त्रिशूल की मार की जिससे वहाँ पर कुण्ड का निर्माण हुआ। नन्दादेवी विवाह के श्रृंगार से सजी हुयी थी। कुण्ड में झुककर पानी पीते समय अपना मुखमण्डल देखकर प्रसन्न हुई, उसके इस रूप को देखकर महादेव ने इस कुण्ड का नाम रूपकुण्ड रख दिया। तभी से १६,२०० फिट की ऊँचाई पर स्थित ठंडी इस झील को रूपकुण्ड के नाम से जाना जाता है। ज्यूरंगली धार की तलहटी पर स्थित इस कुण्ड में हिमालय के प्रतिबिम्ब की छटा अद्भुत है।

रूपकुण्ड रहस्य—ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

१४वीं शताब्दी की बात है कि नन्दादेवी त्रिशूली में शिवजी को ध्यानावस्था में देखकर पुष्पक विमान से अपनी सहेलियों के साथ घूमने निकल पड़ी।

दूर कन्नौज राज्य जो अब राजस्थान में है पर उनकी न जर पड़ी और देवी सहेलियों को छोड़ कन्नौज उतर गई।

कन्नौज की रानी वल्लभा ने देवी से आने का कारण पूछ कर कहा तुम्हें क्या चाहिए? देवी ने एक दिन के लिए राज्य की मांग की जिसे न देने पर देवी रुष्ट हो गयी और श्राप दे डाला। श्राप के दुष्प्रभाव कन्नौज में पड़ने लगे। श्राप से मुक्त होने के लिए राजा जसधवल ने कुलगुरु ब्राह्मण के कहने पर नन्दादेवी की राजजात मनौती रखी। तुरन्त ही दुष्प्रभावो का असर खत्म हुआ। तत्पश्चात चौदपुर गढ़ी से राजजात का कार्यक्रम जानकर राजा राजजात में शामिल होने दल बल, परिवार, नृतकियों व गर्भवती पत्नी के साथ चल पड़ा।

उधर नन्दादेवी सिद्धिपीठ नौटी से राजजात का शुभारम्भ हो गया था कन्नौज के राजा जसधवल एवं चौदपुरगढ़ी के राजा के प्रतिनिधियों के दल का मिलन यात्रा मार्ग के अन्तिम गाँव वाण में हुआ। कन्नौज के विशाल दल के सामने गढ़वाल कुमाऊं के यात्रियों की संख्या बहुत कम थी।

प्राचीन मान्यताओं के अनुसार वाण गाँव के समीप रणिकीधार से आगे गाजे-वाजे, जूते, चमड़े की वस्तुयें स्त्रियाँ, बच्चे, आदि का प्रवेश निषिद्ध रहा हैं, राजा जसधवल को यात्रा के नियम पुनः समझाये गये। राजा नियमों के विपरीत पूरे राजसी ठाठबाट से राजजात में शामिल होकर आगे बढ़ने लगे।

यात्रा के नियमों का उल्लंघन देखकर गढ़वाल एवं कुमाऊं के अधिकांश यात्री अपने घरों को लौट गये उन्हें किसी भीषण दुर्घटना का आभास पहले ही हो गया था। राजपरिवार के कुछ कर्मचारी व ब्राह्मण ही कन्नौज के राजा जसधवल के दल के साथ यात्रा पूरी करने के लिए शामिल हो गये। राजजात वाण, गौरोलीपातल होती हुई निरालीधार पहुँची जहाँ रात में नृतकियों के नाचने पर देवी ने रुष्ट होकर उन्हें शिला में परिवर्तित कर दिया तब से इस स्थान का नाम पातरनौचोनिया पड़ गया।

दल आगे बढ़ा, गगंतोली गुफा में रानी ने एक कन्या को जन्म दिया। राजा के दल के जो लोग ज्यूरागलीधार पहुंच गये थे हिमनद के साथ रुपकुण्ड में समा गये और राजा, रानी, सेवक व नवजात शिशु भयकर ब्रजवृष्टि के कारण लगातार यात्रा की मान्यताओं को तोड़ते हुए मृत्यु को प्राप्त हुए। शिला समुद्र में पड़ाव डाले मात्र गढ़वाल कुमाऊं का यात्रीदल ही सुरक्षित रह पाया।

नन्दादेवी ने आकाशवाणी मार्ग से अपनी वाणी द्वारा चौदपुर गढ़ी के राजा को कन्नौज के राजा जसधवल के यात्रा दल का समाचार देते हुये कहा कि जब भी मेरे वंशज मेरी राजजात में आयेंगे तो वैतरणी में कन्नौज के राजवंश का पित्रतर्पण करेंगे।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की वैज्ञानिक पुष्टि :

रुपकुण्ड (१६२०० फीट) में सैकड़ों मानव शरीर, कंकाल और अन्य प्राप्त वस्तुओं का कई वैज्ञानिकों ने रेडियो कार्बन विधि से पता लगाया कि ये नर कंकाल ६५० वर्ष पुराने हैं, जिससे चौदहवीं शताब्दी के राजा जसधवल की यात्रा की पुष्टि हुई।

रुपकुण्ड रहस्य की ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक दोनों आधारों पर पूरी तरह जाँचा गया है और यह निष्कर्ष निकाला जा चुका है कि रुपकुण्ड में चौदहवीं शताब्दी के राजा जसधवल के यात्रियों के शव हैं जो नन्दादेवी राजजात में देवी की पूजा के लिये होमकुण्ड जा रहे थे और देवी प्रकोप से मृत्यु को प्राप्त हुए।

राजजात शुभारम्भ

सिद्धपीठ नन्दादेवी नौटी में गाये जाने वाले लोकगीतों—जागरों के आधार पर पता चलता है कि नवीं शताब्दी में चौदपुर गढ़ी के राजा शालिपाल ने अपने राजगुरु (नौटियाल) के गाँव नौटी में अपनी ईष्ट देवी श्री नन्दादेवी के श्री मंत्र को एक चबूतरे में भूमिगत कर सिद्धपीठ श्री

नन्दादेवी की स्थापना की। राजगुरु नौटियालो को पूजा का भार देते हुए राजा ने नौटी के भूमियाल देव (भूमि देवता) ऊपराई देवी (अर्पणदेवी) की बड़ी पूजा मौडिवी करने के बाद नन्दादेवी को उसके ससुराल त्रिशूली भजने की यात्रा का प्रति बारहवें वर्ष एक नियम बनाया जिसका नाम राजजात्रा पड़ा जो वर्तमान में अपभ्रंश होकर राजजात (राजा की यात्रा) ने नाम के विख्यात है।

राजा की ईष्टदेवी होने के कारण ही नन्दादेवी को राज राजेश्वरी नन्दादेवी भी कहा जाता है। राजा का छोटा भाई (कानसा भाई) चाँदपुरगढ़ी जो गढ़वाल राज्य की प्रथम राजधानी है के पास ही कांसुवा में बसा जिनके वंशजों को राजवंशी कुंवर नाम से पुकारा एवं सम्मानित किया जाता है। इनको राजा ने अपने प्रतिनिधि के रूप में राजजात के संचालन में राजगुरुओं की मदद के लिए अधिकृत किया।

राजजात समिति के उपलब्ध अभिलेखों के अनुसार १८६८ से १६४६ तक गढ़वाल के पाल वंशी राजाओं का राज्य रहा। पाल वंश के प्रमुख राजा श्री कनक पाल थे, जिन्होंने ६८८ से ७०० तक राज्य किया सन् १८०३ से १८१५ तक गोरखाओं का राज्य रहा व अंग्रेजों की मदद से गोरखों से राज्य वापिस लिया गया, गोरखाओं के शासनकाल के दौरान उन्होंने गढ़वाल क्षेत्र के ताम्रपत्र व लेख नष्ट कर दिये व कुछ अपने साथ ले गये, इसी कारण राजजात सम्बन्धी ऐतिहासिक लेख व ताम्रपत्र उपलब्ध नहीं हैं। राजजात का इतिहास लोककथा, लोकगीतों, किवंदंतियों व मौखिक रूप से संरक्षित कथाओं पर आधारित हैं, जिन्हें एक सूत्र में पिरोकर डा० शिवानन्द नौटियाल द्वारा उपरोक्तानुसार प्रतिपादित किया गया है।

नौटी से ६ किमी० नीचे चाँदपुरगढ़ी है जो सन् ६८८ से ८१५ तक गढ़वाल के पाल वंशीय राजाओं की राजधानी रही, राजा की ईष्ट देवी नन्दा देवी का यंत्र नौटी में होने के कारण राजजात का आरम्भ यहीं से होता है। राजा ने राजजात की व्यवस्था हेतु बारह जाति के ब्राह्मणों को जो निम्न प्रकार हैं, तैनात किया गया है :-

१. नौटियाल	२. नैनवाल	३. देवली	४. मलेठा
५. नवनी	६. सेमवाल	७. गैरोला	८. चमोला
९. डयूंडी	१०. रतूड़ी	११. खण्डूड़ी	१२. थपलियाल

उपजातियाँ सम्भवतया ग्रामों के नाम के अनुसार हैं, एक गाँव की छंतोली का दूसरे गाँव पहुँचने पर मिलन कराया जाता है, इस मिलन के लिए निश्चित शुल्क निर्धारित होता है, व यात्रा में इन छंतोलियों के चलने का क्रम भी पूर्व निर्धारित है जो निम्न प्रकार है:-

१. बगोली की लाटू देवता की छंतोली।
२. राजजात की छंतोली।
३. दीवान खण्डूड़ी छंतोली।
४. बारह थोकी छंतोली।
५. अन्य छंतोली।



बारह थोक के ब्राह्मणों को सेरुला ब्राह्मण भी कहा जाता है। इन ब्राह्मणों को राजा द्वारा जेष्ठता प्रदान की गयी थी, यात्रा में भोजन की व्यवस्था के लिए इन्हें पूरी जिम्मेदारी सौंपी गयी थी। बारह थोक के ब्राह्मणों के साथ राजा द्वारा चौदह सौंपाने अलग-अलग ग्रामों के नियुक्त किये गये थे, जिनका मुख्य कार्य भोजन व्यवस्था के लिए सामग्री जुटाना व यात्रा की अन्य व्यवस्थाएं करना था। ये चौदह सौंपाने निम्न प्रकार हैं :-

१. कुरुड़ के गौड़
२. देवराड़ा के हटवाल
३. मैटा के रावत
४. भैंटी के रावत
५. थराली के बुटोला रावत
६. त्रिकोट के बुटोला रावत
७. आदरा के भण्डारी
८. पास्तोली के कठैत
९. डुंगरी बूरसोल के फरस्वाण
१०. ग्वालदम जौली के गड़िया
११. कोठी के रावत
१२. माल के रावत
१३. देवाल के श्रेष्ठ
१४. फल्दियागाँव के बिष्ट

१९६८ तक की यात्राओं में सभी प्रकार के प्रबन्ध बारहथोकी ब्राह्मणों व चौदह सौपानों तथा राजजात समिति द्वारा पारस्परिक सहयोग व सामंजस्य से किये जाते थे।

नवीं शताब्दी से निर्वाध गति से चली आ रही नन्दादेवी राजजात हर बारहवें वर्ष आयोजित करने में कभी-कभी कुछ विलम्ब योग पड़ने के कारण परम्परागत रूप से होता रहा है, नौटी में प्राप्त अभिलेखों के अनुसार सन् १८४३, १८६३, १८८६, १९०५, १९२५, १९५१, १९६८, १९८७ में राजजात आयोजित की गयी। यह साहसिक यात्रा दुनियाँ की सबसे दुर्गम, लम्बी एवं बड़ी यात्रा है, जिसमें भगवती को मायके से ससुराल छोड़ने के लिये उत्तराखण्ड के श्रद्धालु भक्तों के साथ-साथ २०० से अधिक देवी-देवताओं के निशान, छंतोली व डोलीयाँ भाग लेती हैं। इस वर्ष देवी के दर्शनों के लिये एक लाख से अधिक तीर्थ यात्रियों के यात्रा में शामिल होने की सम्भावना है। नौटी से त्रिशूली की तलहटी होमकुण्ड (१३२०० फीट) और वापस नौटी १६ पड़ावों की २८० किमी० की पदयात्रा राजजात में शामिल है, ज्योंरागली पार कर यात्रियों को नंगे पांव ही होमकुण्ड पहुँचना पड़ता है। यात्रा अगस्त-सितम्बर के महीने ही आयोजित होती है।

राजजात का फिल्मीकरण व सरकारी सहायता

भारत सरकार ने सन् १९६८ की राजजात की फिल्म, दि एक्सपेडिशन ऑफ फेथ तथा सन् १९८७ की राजजात को दूरदर्शन लखनऊ, उ०प्र० के सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, तथा प्रदेश की जानीमानी लघु फिल्म निर्माता कम्पनी टी.वी. गिरीदूत देहरादून द्वारा फिल्म निर्माण किया गया। सन् १९८७ में उ०प्र० सरकार ने २२ लाख रुपये पहली बार यात्रा व्यवस्थाओं के लिए स्वीकृत किये। राजजात के इतिहास में पहली बार वर्ष १९८७ में तत्कालीन आयुक्त गढ़वाल मण्डल श्री सुरेन्द्र सिंह पांगती की अध्यक्षता में व्यवस्था आदि हेतु कमेटी गठित की गई। जिला प्रशासन, सेना व अर्धसैनिक बलों द्वारा राहत कार्यों में सहायता प्रदान की गयी।

श्री नन्दादेवी राजजात समिति के अध्यक्ष व गढ़वाल के राजवंशी कुंवर श्री बलवन्त सिंह कुंवर की अध्यक्षता में गठित समिति के अथक प्रयासों से उ०प्र० सरकार ने श्री नन्दादेवी राजजात समिति की विगत कई वर्षों की मांग पर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री रामप्रकाश गुप्त, योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री के.सी. पंत, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के मंत्री डा० एम.एम.जोशी, संस्कृति एवं पूर्व धर्मश्व मंत्री डा० रमेश पोखरियाल "निशंक", उ०प्र० विधानपरिषद के सभापति श्री नित्यानन्द स्वामी, उत्तरांचल विकास राज्यमंत्री श्री मातवर सिंह कण्डारी, आवकारी राज्यमंत्री श्री नारायणराम दास, वन राज्यमंत्री श्री वंशीधर भगत व समस्त उत्तराखण्ड के विधायकों, सदस्य विधान परिषद, सदस्य राज्य सभा व लोक सभा की पहल पर यात्रा की महत्ता को देखते हुए पहली बार महाकुम्भ स्तर पर आयोजित करने हेतु विभिन्न व्यवस्थाओं के सम्पादन के लिए वित्तीय स्वीकृतियाँ प्रदान की हैं। तथा प्रमुख सचिव उ०प्र० शासन, आयुक्त गढ़वाल मण्डल व जिलाधिकारी चमोली की अध्यक्षता में व्यवस्थाओं के क्रियान्वयन हेतु पड़ाव अधिकारियों की कमेटियाँ गठित की हैं। प्रत्येक पड़ाव के लिए जिला स्तरीय अधिकारियों को पड़ाव अधिकारी नियुक्त किया गया। समिति के पदाधिकारियों ने भी प्रत्येक पड़ाव पर पड़ाव समितियों का निर्माण किया है जो पड़ाव अधिकारियों से सन्न्धय बनाकर विकास कार्यों को क्रियान्वित करवायेंगे और पुख्तास्वरूप प्रदान करवाने में सहायता कर यात्रा को सुलभ बनायेंगे। राज्यसभा सदस्य श्री मनोहर कान्त ध्यानी ने २० लाख रुपये तथा लोकसभा सदस्य मेजर जनरल (अ०प०) श्री भुवन चन्द्र खण्डूरी ने ६ लाख रुपये अपनी सांसद निधि से यात्रा पड़ाव मार्ग पर यात्रियों की सुविधा हेतु दिलाए।

लोकगीतों की टेपरिकॉर्डिंग

नाट्टी में गाये जाने वाले नन्दादेवी के लोकगीत अपने अन्तिम चरण में पहुँच गये हैं। इन गीतों को गाने वाली महिलायें काफी वृद्ध हो

गयी हैं, उनकी संख्या में भी धीरे-धीरे कमी आती जा रही है। ऐसे ही लाता, कुरुड़ एवं वाण के गायकों का हाल है। संगीत एवं नाटक अकादमी उ०प्र० ने गीतों की रिकॉर्डिंग जरूर की है, लेकिन उस पर भी काफी कार्य करने की जरूरत है। हाल ही में आकाशवाणी नजीमाबाद तथा देहरादून स्थित टी.वी. गिरिदूत द्वारा नौटी के जागरों पर ऑडियो रिकॉर्डिंग तैयार की गई है, जो सम्भवतः राजजात यात्रा २००० से पहले जनमानस तक पहुँचा दी जायेगी। राजजात के जागर गीतों पर आधारित उत्तराखण्ड के सुप्रसिद्ध लोकगीतकार एवं गायक श्री नरेन्द्र सिंह नेगी द्वारा भी गढ़वाल विश्वविद्यालय के डा० डी.आर. पुरोहित के शोध से एक ऑडियो कैसेट तैयार किया गया है।

नन्दादेवी राजजात २००० इन्टरनेट पर

वर्ष २००० की राजजात के ब्रह्म प्रचार-प्रसार के जरिए विश्व भर में पहुँचाने के लिए श्री नन्दादेवी राजजात केन्द्रीय समिति द्वारा देहरादून स्थित प्रदेश की जानीमानी लघु फिल्म एवं ओडियो कैसेट निर्माता कम्पनी टी.वी. गिरिदूत, ८२, किशननगर देहरादून से आग्रह किया गया। तत्पश्चात् कम्पनी के निर्माता-निर्देशक श्री शिव कुमार पैन्थूली द्वारा राजजात की सम्पूर्ण जानकारी सहित डब्ल्यू.डब्ल्यू.डब्ल्यू हिमालयन यात्रा डॉट कॉम नाम की वेबसाइट सम्पूर्ण विश्व को हिमालय यात्रा-नन्दादेवी राजजात २००० की जानकारी के लिए प्रस्तुत कर दी गई है जिसका उद्घाटन माननीय केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार डा० एम. एम. जोशी के करकमलों से किया गया। यात्रियों से आग्रह किया गया है कि वे श्री पैन्थूली के ई-मेल पर यात्रा की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें।

श्री नन्दादेवी राजजात समिति के अध्यक्ष एवं गढ़वाल के राजवंशी कुंवर बलवन्त सिंह ने समिति को राजजात २००० के लिए सक्रिय और प्रत्येक प्रड़ाव पर पड़ाव समितियाँ व देश के अनेक नगरों में

जैसे- गढ़वाल के लिए देहरादून में टी.वी. गिरिदूत के श्री शिव पैन्थूली, अल्मोड़ा में कुमाऊँ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जोशी तथा नई दिल्ली में कर्नल नवानी के माध्यम से यात्रियों हेतु इन्फॉर्मेशन सेन्टर/यात्रा समन्वयक केन्द्र गठित कर केन्द्र व राज्य सरकारों व स्थानीय प्रशासन से लगातार यात्रा को सफल बनाने हेतु प्रयास किये जा रहे हैं और आशा की जा रही है कि नन्दादेवी राजजात समिति की देखरेख में महानन्दा सभी श्रधालुओं, यात्रियों, अधिकारियों व पड़ाव समिति के सदस्यों और अन्य सभी सहायता करने वाले महानुभावों की रक्षा करते हुए सुफल प्रदान करेगी।



महाकुम्भ, महायात्रा-नन्दादेवी राजजात-२००० का शुभारम्भ स्थल एवं यात्रा पड़ाव

नन्दादेवी राजजात के मार्ग में १६ पड़ावों का अपना ही विशिष्ट महत्व है जो निम्नवत् हैं :-



यात्रा का शुभारम्भ स्थल : नौटी

दिनांक २२ अगस्त २०००, समुद्रतल से ऊंचाई १६५० मी०

स्थिति- कर्णप्रयाग से २५ किमी० मोटर मार्ग द्वारा।

सिद्धपीठ नौटी में भगवती नन्दादेवी की स्वर्ण प्रतिमा पर प्राण प्रतिष्ठा देकर, रिगाल की पवित्र राजछंतोली व चार सींग के मेढे की विशेष पूजा-अर्चजा की जाती है। भगवती नन्दा को मायके के ससुराल भेजने के लिए आभूषण, वस्त्र, उपहार, मिष्ठान आदि चार सींग के मेढे की पीठ पर फांचे में रखकर कैलाश की ओर विदा किया जाता है। सन् १९७४ में कांची कामा कोटि के शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरवस्ती जी के मार्गदर्शन में उत्तर भारत का प्रथम श्रीयंत्र मन्दिर की स्थापना कैलाश मानसरोवर के स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज ने नौटी में श्री नन्दादेवी मन्दिर परिसर में करायी। बताया जाता है कि नौटी गाँव में प्रत्येक राजजात यात्रा के अवसर पर नरबली द्वारा देवी पूजा सम्पन्न की जाती थी जो ३०० वर्ष पूर्व भगवती के नरबली स्वीकार न किये जाने के फलस्वरूप यह प्रथा समाप्त हो गई।

इस आयोजन का दूसरा पहलू यह भी है कि जब यात्रा अपने चरम के लिए हिमालय के दुर्गम क्षेत्र में प्रवेश करती है ठीक उसी समय सिद्धपीठ नौटी में कथा वाचन, श्रवण हो इस आराधना के साथ शुरू होती है कि यात्रा सुगम हो और कष्टप्रद न हो तथा सभी यात्री सकुशल लौटें। इस वर्ष २००० राजजात के अवसर पर १ सितम्बर से १० सितम्बर तक

अनन्त विभूषित ज्योतिर्पीठाधिश्चर शंकराचार्य स्वामी माधवाश्रम जी महाराज के सौजन्य से श्रीमद् देवी भागवत, कोटेश्वर के महन्त स्वामी शिवानन्द जी महाराज की देखरेख के आयोजित होगी।

प्रथम पड़ाव—ईडावधाणी (२२ अगस्त)

१० किमी०, (१६५० फीट)

नौटी में यात्रा के शुभारम्भ पर अपार भीड़ होती है। गाजे—वाजे व भंकोरों सहित भगवती नन्दा को हजारों लोग विदा करते हैं, भगवती वचन निभाने के लिए ईडावधानी पूजा लेने जाती है। मार्ग में छंतौली, ल्यूइसा, सिलगी, चौड़ती, हेलुड़ी में माँ भगवती का आदर—सत्कार होता और भगवती तथा चौसिंगा खाडू रात्री विश्राम हेतु ईडावधाणी पहुँचते हैं। जहाँ रातभर जागरण होता है। पास ही अलकनन्दा और पिंडर के संगम पर कर्ण के नाम पर कर्णप्रयाग शहर में भी श्रद्धालुओं की अपार भीड़ रात्रिविश्राम करती है।

दूसरा पड़ाव : नौटी (२३ अगस्त)

१० किमी० (१३२० फीट)

ईडावधाणी से दूसरे दिन यात्रा वापस नौटी के लिए रवाना होती है मार्ग में रिठौली, जाख, दियारकोट, कुकड़े पुडियाणी, कनोठ, झड़कण्डे व नैणी गाँवों में पूजा लेकर रात्रि विश्राम हेतु राजगुरु परिवार के गाँव नौटी पहुँचते हैं, मन्दिर में रात भर जागर होते हैं।

तीसरा पड़ाव : कांसुवा (२४ अगस्त)

१० किमी० (१२० मी०)

नौटी से नन्दादेवी राजजात की कैलाश के लिये विदाई के समय गाँव के नर—नारी, बच्चे नम आँखों से विदा करते हैं। नैणी व देवल

गढ़सारी की छंतोलियाँ वैनौली गाँव से पहले यात्रा में शामिल होती हैं। भलैड़ी व नौना की छंतोलियाँ भी यात्रा में शामिल होकर राजजात की शोभा बढ़ाती हैं। यात्रा गढ़वाल के राजवंशी कुंवरों के मूल गाँव कांसुवा पहुँचती है, यहाँ पर परम्परागत रूप से यात्रियों का भव्य स्वागत होता है।

राजा के छोटे भाई(कानसा) के गाँव कांसुवा में नन्दादेवी, भराड़ी देवी व कैलापीर देवताओं के मन्दिर हैं। भराड़ी के चौक में सर्वप्रथम चार सींक वाले मेढ़े और पवित्र रिंगाल की राजछंतौली की पूजा अर्चना होती है। यहाँ के पुजारी नौटियाल हैं और अब नौनी पूजा करते हैं। गढ़वाल के राजवंशियों के राजगुरु नौटियाल प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठान में उनके सहायक होते हैं।

चौथा पड़ाव : सेम (२५ अगस्त)

१० किमी०, (१२६० मी०)

कांसुवा से सेम खाना होने पर कांसुवा गाँव में (महादेव घाट मन्दिर है)। यहाँ पर नन्दादेवी की पवित्र राज छंतौली कोटी के ड्यूणी ब्राह्मणों को साँपी जाती है। तत्पश्चात् गढ़वाल की प्रथम राजधानी चाँदपुरगढ़ी में गढ़वाल नरेश की शाही पूजा होती है, जिसे देखने गढ़वाल कुमाऊँ क्षेत्र के यात्री बड़ी संख्या में आते हैं। यहीं पर कैलापीर में कालिका देवी का भव्य मन्दिर व चाँदपुरगढ़ी के गढ़वाल राज्य की प्रथम राजधानी के महल व किले हैं, तत्पश्चात् उज्जवलपुर व तोप में पूजा पाकर देवी सेम





राजजात पड़ाव
दृश्य



पहुँचती है, यहाँ पर गैरोली व चमोला की छंतोलियाँ यात्रा में शामिल होती हैं। यहीं नन्दादेवी का प्राचीन मन्दिर भी सुशोभित है जहाँ रातभर जागर व विशेष पूजा अर्चना की जाती है, तीर्थ यात्रियों के लिए चाँदपुरगढ़ी के समीप आदिवद्री भी विशेष आकर्षण का केन्द्र रहता है।

पाँचवाँ पड़ाव : कोटी (२६ अगस्त)

१० किमी० (१३६० मी०)

सेम से कोटी जाने के लिए धारकोट तक थोड़ा चढ़ाई है। धारकोट, धण्डियाल व सिमतौली गाँवों में पूजा पाकर यात्रा सितौलीधार पहुँचती हैं। यहाँ पर भगवती से कोटिश प्रार्थना की जाती है, इसीलिए धार के दूसरी तरफ के गाँव का नाम कोटी पड़ा। यात्रा नन्दादेवी मन्दिर कोटि व मैती पहुँचती है, यहाँ पर विशेष पूजा होती है। यहीं पर खण्डूड़ा, रतूड़ा, चलाकोट, थापली को बंगोली के लादू यात्रा में शामिल होते हैं। रात में मन्दिर में जागरण होता है। यहाँ प्राचीन पत्थर का सुन्दर मूर्तियाँ हैं, लादू व जीतू बगड़वाल का मन्दिर भी गाँव में है।

छठां पड़ाव : भगोती (२७ अगस्त)

१२ किमी०, (१३२० मी०)

कोटी से भगोती रवाना होने पर धतोड़ा के खेतों में भगवती के पहलवानों का मल्लयुद्ध होता है, इस युद्ध को देखने के लिये सम्पूर्ण क्षेत्र का विशाल मेला यहाँ पर लग जाता है। कोटी के धतोड़ा, बम्याला, कंडवाल गाँव चौरीखाल में कंडवाल गाँव, छैकुड़ा, भनोड़ा की छंतोलियाँ राजजात यात्रा में शामिल होती हैं। भगोती पहुँचने पर भगवती व यात्रा दल का भव्य स्वागत किया जाता है, यह भगवती के मायके क्षेत्र का अन्तिम पड़ाव है। भगवती के नाम से ही भगवती गाँव का नाम पड़ा है।

राजजात
पड़ाव दृश्य



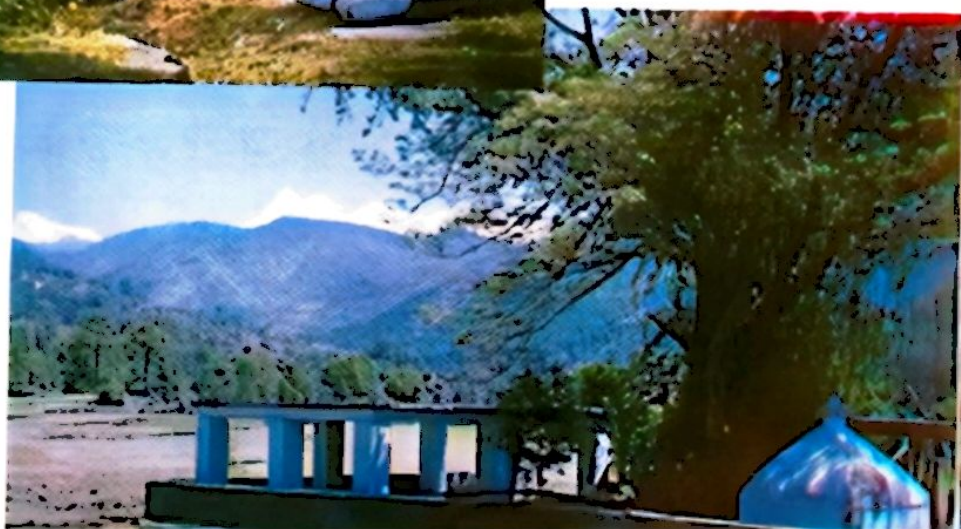
सातवाँ पड़ाव : कुलसारी (२८ अगस्त)

१२ किमी०, (१०६० मी०)

भगोती से केदारु देवता की छंतोली भी यात्रा में शामिल होती है। भगोती गाँव की सीमा पर क्यूर गधरे पर किमोली, नैणी की छंतोलियों का मिलन होता है, यहाँ पर भगवती कई घंटों के अनुनय विनय के बाद मायके से ससुराल क्यूर गधरे को पार कर प्रवेश करती है। यहाँ पर सम्पूर्ण पिण्डर घाटी का सबसे बड़ा मेला लगता है। चाँदपुर व सिरगुर पट्टी की सभी छंतोलियाँ यहाँ पर इकट्ठा होकर भगवती के ससुराल क्षेत्र में पर्दापण करती है, यहाँ से बुटोला थोकदारों, सयानों का सहयोग यात्रा को प्राप्त होता है। रास्ते में नारायणवगड़, पन्ती, बैनोली, भींग गधेरा, हरमनी नगर कोटि का यात्रा में भव्य स्वागत सत्कार होता है। कुलसारी पहुँचने पर भगवती के ससुराल क्षेत्र के प्रथम पड़ाव में पहुँचने का महान व भव्य स्वागत होता है। यहाँ पर राजजात हमेशा अमावस्या के दिन पहुँचती है, अमावस्या की काल रात्रि को काली यंत्र को भूमि से निकालकर पूजा-अर्चना की जाती है और फिर अगली यात्रा तक इसे भूमिगत कर दिया जाता है। रातभर देवी पूजन व देवी जागरण सम्पन्न किये जाते हैं। यहाँ दक्षिण काली, त्रिमुखी शिव, लक्ष्मी नारायण, हनुमान, सूर्यभगवान का मन्दिर है तथा बाहर के क्षेत्र में लक्ष्मी जी की चरणपादुका भी है। कालीसार रूप में काली की पूजा करने पर इस स्थान का नाम कुलसारी पड़ा और उसके पुजारी वहाँ पर निवास करने वाले कुसारा ब्राह्मण हुए, यहाँ वर्ष १६६८ से राजजात के दौरान बलिप्रथा बन्द कर दी गई है।



राजजात
पड़ाव दृश्य



आठवाँ पड़ाव : चेपडियू (२६ अगस्त)

१० किमी० (१२१० मी०)

कुलसारी से चलने पर थराली में विशाल मेला लगता है, थराली के पास ही देवराड़ा गाँव है, जहाँ बघाण की राजराजेश्वरी नन्दादेवी वर्ष में ६ महीने रहती है और शेष ६ महीना कुरुड़ (दशोली) में रहती है, चेपडियू बुटोला थोकदारों का गाँव है। यहाँ पर नन्दादेवी की स्थापना घर पर ही की गयी है, कोई विशेष देवी मन्दिर नहीं है, गाँव के नीचे वेतालेश्वर शिव मन्दिर सुशोभित है, रात्रि विश्राम के समय लगभग सभी लोग देवी जागरण में व्यस्त रहते हैं।

नौवा पड़ाव : नन्दकेशरी (३० अगस्त)

५ कि०मी० (१२१० मी०)

इस वर्ष श्री नन्दादेवी राजजात २००० के अवसर पर पहली बार नन्दकेश्वरी में पड़ाव रखा गया है, क्योंकि यदि प्रति बारहवें वर्ष में नियमित राजजात करने की परम्परा बनायी जाती है तो नन्दाअष्टमी व नन्दा नवमी का फलदायक मुहूर्त निकालने के लिए एक पड़ाव कम या अधिक करना पड़ेगा। इस वर्ष यात्रा में सप्तमी, अष्टमी के मिलान पर पूजा का योग पड़ रहा था जो फलदायक नहीं था। इस कारण ज्योतिष गणना के आधार पर अष्टमी व नवमी के मिलान पर होमकुण्ड में पूजा के शुभ एवं फलदायक मुहूर्त के लिए नन्दकेश्वरी में एक पड़ाव बढ़ाना पड़ा।

वर्ष २००० में ३२ वर्षों बाद नन्दकेशरी में बघाण की राजराजेश्वरी नन्दादेवी की डोली कुरुड़ से चलकर राजजात में शामिल होगी। यहाँ पर कुमाऊं से बड़ी संख्या में यात्री शामिल होते हैं और इसी वर्ष ७५ वर्षों बाद अल्मोड़ा की नन्दा कोट, डंगोली की भगवती की कटार सहित कुमाऊं क्षेत्र के देवी-देवताओं के साथ राजजात में शामिल होने नन्दकेशरी पहुँचेगी।



नन्दकेशरी में सुरई के पेड़ पर केश अटक जाने के कारण देवी-दैत्य से बचने के लिए पेड़ में छिप गई और भैरव का याद किया। तत्पश्चात् महादेव ने उनकी रक्षा की, जिस कारण इस स्थल का नाम नन्दकेशरी पड़ गया। सम्पूर्ण यात्रा के दौरान मात्र नन्दकेशरी में ही मन्दिरों का समूह पहली बार दिखलायी पड़ता है। नन्दीकेशरी सम्पूर्ण गढ़वाल एवं कुमाऊँ क्षेत्र के देवी-देवताओं का मिलन स्थल भी कहलाता है, जिसे सांस्कृतिक मिलन का केन्द्र भी कहना उचित होगा। यहीं कंडवाल (सिरगुट पट्टी) की ओर से प्रत्येक राजजात में वर्ष १६६८ से अष्टमी के समय भव्य यज्ञ की व्यवस्था की परम्परा है। नन्दकेशरी में बधाण की नन्दा का राजजात से मिलने के समय आलोकिक और अदभुत दृश्य उत्पन्न हो जाता है।

दंशवा पड़ाव : फल्दियागाँव

(३१ अगस्त) १० किमी० (१४८० मी०)

दूसरे दिन प्रातः राजजात नन्दकेशरी से फल्दियागाँव के लिए प्रस्थान करती है, रास्ते में पूर्णाशेरा पर भेकलझाड़ी का देवी यात्रा में विशेष महत्व है, माना जाता है कि जब देवी कैलाश जा रही थी, तब दैत्यों से बचने के लिए भागते हुए लहलहाते खेतों में रास्ता बनाकर बालियों के बीच छिप गई, दैत्य द्वारा देख एवं पहचान लिए जाने पर देवी क्रोधित हो गई और उस स्थान पर कभी भी फसल हरी न होने का श्राप दे डाला। शापित होने की वजह से इस स्थल पूर्णाशेरा पर आज भी फसल नहीं उगती है। बाद में जिस झाड़ी में छिपकर बाद में देवी ने दैत्य से अपनी जान बचाई वह झाड़ी देवी कृपा से हर मौसम में हरी-भरी दिखलायी पड़ती है। कुनियाल ब्राह्मणों द्वारा इस क्षेत्र से होमकुण्ड तक विशेष पुजा परम्परागत रूप से की जाती है।

मार्ग में देवाल विकासखण्ड में भी शिव मन्दिर श्रद्धालुओं का आकर्षण का केन्द्र रहता है, यहाँ प्राचीन मूर्तियाँ विद्यमान हैं, मन्दिर के

समीप ही राजजात के दौरान एक वृहद मेला सुन्दर स्वरूप प्राप्त करता है। तत्पश्चात् यात्रा में शामिल विभिन्न देवी-देवताओं की छतौलियाँ हाट कल्याणी, उलंगरा में पूजा पाकर फल्दिया गाँव पहुँचती है। उलंगरा में एक प्राचीन भवन की कलाकृति पर्यटकों के लिए दर्शनीय है। फल्दिया में रात्रि जागरण जनसमूह को देवी के प्रति आस्था रखने के लिए प्रेरित करता है। गाँव के नीचे नदी के किनारे जैन विस्त मन्दिर स्थित है, इसमें प्राचीन पत्थर की मूर्तियाँ विद्यमान हैं। गाँव में रेवाती देवता, गुल्लमोहर, काली का मन्दिर, लाटू का मदन दानू पडियार गोरिल का मन्दिर लिंग व पत्थर की मूर्ति में अवस्थित है।

ग्यारहवाँ पड़ाव : मुन्दोली (१ सितम्बर)

१० कि० मी० (१७५०मी०)

फल्दिया गाँव से आगे पिलफाड़ा के नन्दादेवी मन्दिर में बड़ा मेला लगता है यहाँ पर भगवती ने शस्त्रों से पिलवा दैत्य को फाड़ डाला था इसलिए इस स्थान का नाम पिलफाड़ा पड़ा। ल्वाणी, बगरिगाड़ में पूजा स्वागत पाते हुए यात्रा रात्रि विश्राम हेतु मुन्दोली पहुँचती है। यात्रा का यह अन्तिम बस स्टेशन है, यहाँ से जीप द्वारा लोहाजंग तक पहुँचा जा सकता है।

मुन्दोली पहुँचने पर भगवती व यात्रा दल का भव्य स्वागत होता है, यहाँ पर महिलायें व पुरुष संयुक्त रूप से स्वागत गीत झौड़ा के रूप में गाते हैं, इसी प्रकार विदाई के गीत होते हैं।

मुन्दोली के ऊपर लोहाजंग की तरफ गाँव की परम्परा है कि जिसका वंश मिटता है यानी जिसकी कोई पुत्र सन्तान नहीं होती है, वही इस स्थान पर सुरई पेड़ लगाता है और चबूतरा बनाता है, स्मृतिस्वरूप चबूतरे पर पत्थर भी लगाता है और यह चबूतरा उसी व्यक्ति के नाम से प्रसिद्ध होता है। जो यात्री सम्पूर्ण राजजात यात्रा में भाग नहीं ले पाते और दुर्गम हिमालय क्षेत्र की यात्रा करना चाहते हैं या जिनके पास समय

की कमी होती है वे सीधे मुन्दोली पहुँचकर घाट तक की एक सप्ताह की कठिन व दुर्गम यात्रा में शामिल होते हैं। इसी दुर्गम यात्रा को सुगम बनाने के लिये नौटी में इसी दिन (इस वर्ष एक सितम्बर २०००) से श्रीमद् देवी भागवत का आयोजन श्रद्धापूर्वक प्रारम्भ किया जाता है। मुन्दोली में भी रातभर जागर, नृत्यगीत इत्यादि में यात्री व्यस्त-मस्त रहते हैं।

बारहवाँ पड़ाव : वाण (२ सितम्बर)

१५ कि० मी० (२३४० मी०)

मुन्दोली से आगे लोहाजंग (ल्वाजिंग) एक मनोरम स्थल है, यहाँ से हिमालय काफी नजदीक दिखलायी देता है, पूरा बघाण परगना व कुमाऊँ की पहाडियाँ दूर-दूर तक दिखलायी देती हैं। लोकगीतों के आधार पर बताया जाता है कि भगवती नन्दा ने यहाँ लोहासार नाम के दैत्य का संहार किया था, उसके साथ हुए जंग की स्मृति में इस स्थान का नाम ल्वाजिंग पड़ा।

लोहाजंग में नन्दादेवी का चबूतरा है, घौसिंह, काली, दानू तथा नन्दादेवी के मन्दिर हैं। भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्डकर्जन जिस रास्ते ग्वालदम से आली बुग्याल तक गये थे, उसे आज तक लॉर्ड कर्जन रोड के नाम से जाना जाता था, लेकिन अब इसे नन्दादेवी राजजात समिति के आग्रह पर आम जनता द्वारा राजजात पथ के नाम से पहचाना जाने लगा है। यहाँ पर पर्यटन आवास गृह और वन विभाग गेस्ट हाऊस भी यात्रियों को सुविधायें प्रदान करता है। लोहाजंग में बघाण क्षेत्र का विशाल मेला लगता है। यात्रा में आगे चलकर वाण पहुँचने पर भगवती का भव्य स्वागत होता है, वाण गाँव यात्रा पथ का अन्तिम गाँव है, यहाँ पर वाण के लादू देवता के मन्दिर के भीतरी कपाट इसी दिन खोले जाते हैं। गाँव वाण कई कि० मी० तक फैला है, यहीं पर यात्रियों की सर्वाधिक भीड़ इकट्ठा होती है।

वाण में दशोली कुरुड़ की नन्दा, मय लादू, कण्डारा हिन्डोली

दशमद्वार की नन्दा मय लाटू, केदारू पौल्या, नौना दशोली की नन्दादेवी, नौली का लाटू, मोठा का लाटू, वालम्पा देवी कुमजुंग से ज्वाल्पादेवी की डोली, त्वाणी से लासी का जाख, खैनुरी का जाख, मंझोटी की नन्दा, फरस्वाण फाट के यक्ष देवता पस्वा, जैसिंह देवता, काण्डई लाखी का रूप दानू, बूरा का घाँसिंह, जस्यारा, कन्खुल, कपीरी, बद्दीश पंचायत, बद्दीनाथ की छतोली, उमट्टा, डिम्मर, घाँसिंह सुतोला, कोट डंगोली की कटार, स्यारी भैटी भगवती, बूरा नन्दा, रामणी का त्यूण रजकोटी, लाटू, चन्दनिया पेनखण्डा आदि के २०० से अधिक देवी-देवताओं का मिलन होता है, दशोली, दशमद्वार, लाता, अल्मोड़ा, कुरुड़, बघाण की नन्दा देवी डोलियों पर सज धज कर राजजात यात्रा में चार चाँद लगाते हैं। वाण से वाण का प्रसिद्ध लाटू देवता व चार सींग के मेढ़े की अगुवाई में यात्रा आगे बढ़ती है। जाख के देवता का अद्भुत कटार भेद प्रदर्शन भी यहाँ पर दर्शनीय है। यहाँ स्वर्का का केदारू, मैखुरा की चण्डिका, घाट कनौल होकर तथा रँस, असेड़, सिमली, डुंग्री, सणकोट, नाखोली व जुनेर की छंतोलियाँ ४ ताल व ४ बुग्यालों को पारकर वाण में राजजात में सम्मिलित होती हैं। वाण में लाटू देवता का मन्दिर देवदार के पेड़ों से घिरा व सटा हुआ है, जिनकी मोटाई १५ मीटर व्यास के आसपास होगी। रातभर विशिष्ट पूजा, नृत्यगीतों के साथ महान जागरण का आयोजन सभी को सम्मोहित कर देता है, वाण में देवी ने ग्रामवासियों से वचन लिया था कि यदि मेरी यात्रा के दौरान आप सभी अपने-अपने घरों के दरवाजे यात्रियों के लिए खुले रखेंगे और उनका आदर-सत्कार भोजन इत्यादि की व्यवस्था करेंगे तो ही मैं तुम्हारे गाँव वाण से होती हुई कैलाश की ओर जाऊँगी और तभी तुम्हें शुभ लाभ और शुभ फल की प्राप्ति होगी।



तेरहवाँ पड़ाव : गरोलीपातल : (३ सितम्बर)

१० कि०मी० (३३८० मी०)

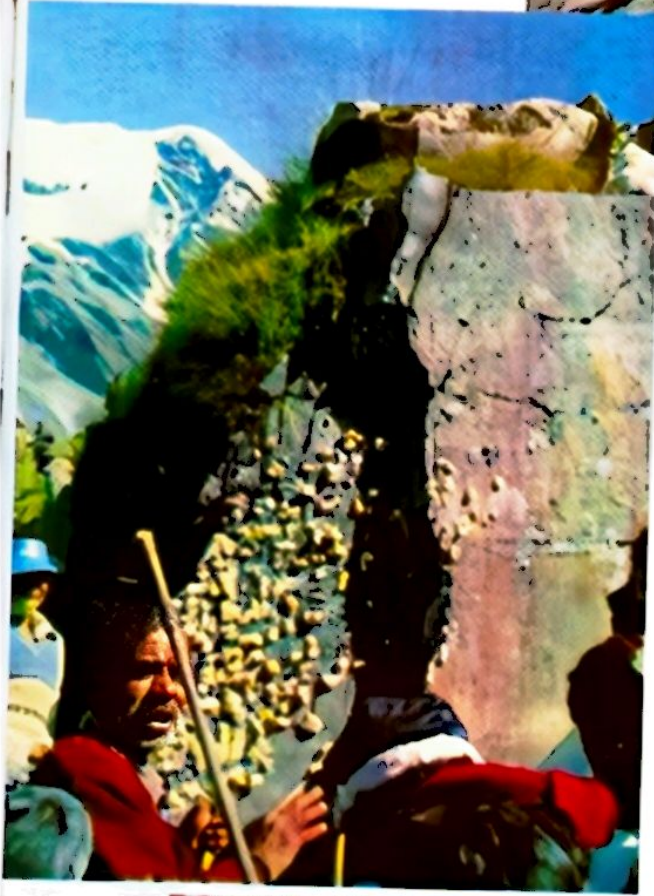
वाण से आगे रिणकीधार में भगवती नन्दा ने अपने यात्रा पथ के अन्तिम दैत्य का संहार किया था। वाण के लाटू देवता के शौर्य और निष्ठा से प्रसन्न होकर देवी ने अपने गणों से कहा था कि अब वाण का लाटू मेरी यात्रा का अगवान (पथ प्रदर्शन) होगा। वाण में लाटू ने यात्रा की पवित्रता के लिए अनेक प्रतिबन्धों का वचन देवी से लिया था। रिणकीधार से आगे कैलगंगा में यात्री स्नान और तिलपात्र करते हैं, यहाँ पर गाढ़े के कपड़े का थान नदी में डालकर पार किया जाता है। प्राचीन मान्यता है कि इस नदी में चाहे जितना भी पानी हो वाण के लाटू देवता अपना निशान डालकर इसके जलस्तर को इतना कम कर देते हैं कि यात्री आसानी से इसे पार कर लेते हैं। रास्ते में द्वाणीग्वर नामक स्थान है, दानू देवता की वृद्ध पत्नी ने यहाँ पर यात्रा नियम का उल्लंघन किया जिस कारण मृत्यु को प्राप्त हुई, उसी के नाम पर इस स्थान का नाम द्वाणीग्वर पड़ा इसके बाद दाडिमडाली स्थान आता है। तत्पश्चात् यात्रा घने देवदार और सुरई के जंगल के बीच स्थित गैरोलीपातल में रात्रि विश्राम के लिए पहुँचती है।

चौदहवाँ पड़ाव : पातरनचौणियाँ (४ सितम्बर) १२ कि०मी० (१३२०० फीट)

गरोलीपातल से यात्रा दल वैतरणी पहुँचता है, जिसे अब वेदनी, वेदनी बुग्याल, वेदनीकुण्ड नाम से भी पुकारा जाता है। यहाँ पर हिमालय की तलहटी में स्थित सुन्दर कुण्ड को वेदनीकुण्ड कहते हैं। इसमें हिमालय का प्रतिबिम्ब सुन्दर दिखाई देता है। वेदनी बुग्याल के समीप ही मीलों लम्बा, ढालदार, आली बुग्याल है। आली बुग्याल भी अपनी सुन्दर छटा के लिए प्रसिद्ध है। यहीं से नाना प्रकार के फूल, वनस्पतियाँ, जड़ी-बूटियाँ मिलनी आरम्भ होती हैं। वृक्षों की पंक्ति को गरोली पातल से ही विदा दे दी जाती है। वृक्षरहित बुग्याल दर्शनीय एवं रोमांचकारी है। वेदनी में महेश मर्दनी का मन्दिर स्थित है।



राजजात पड़ाव दृश्य



रूपकुण्ड के शहीदों के उद्धार के लिए पिण्ड तर्पण

यहाँ पर गढ़वाल के राजवंशी कुंवरो द्वारा रूपकुण्ड के शहीदों के लिये पिण्ड तर्पण दिये जाते हैं। पहले नौ छटांक सूत को कुण्ड के चारों ओर यात्री पकड़कर अपने पूर्वजों का स्मरण करते हुए मौन पूजा करते हैं, तत्पश्चात् सूत के धाके को तोड़कर प्रत्येक यात्री प्रसाद के रूप में अपने पास रख लेता है। कुण्ड में स्नान व परिक्रमा कर पुण्य प्राप्त करने की परम्परा है। बघाण की राजराजेश्वरी नन्दादेवी सप्तमी के दिन कुरूड़ से प्रतिवर्ष डोली में वेदनी तक पहुँचकर छः महीने प्रवास के लिए देवराड़ा चली जाती है। कुछ वर्षों से प्रदेश-पर्यटन विभाग भी इस अवसर पर तीन दिवसीय वेदनी-रूपकुण्ड महोत्सव आयोजित कर रहा है। वेदनी से मेढ़ा अपार जन-समूह और सभी देवी-देवताओं के साथ गाजे-बाजे और भंकूरो को वेदनी से ही लौटाकर बगैर शोर-शरावा किये देवी-भगवती का जाप करते हुए रूपकुण्ड के कठिन रास्ते की ओर आगे बढ़ता है।

वेदनी कुण्ड से यात्री दल पातरनचौनियाँ पहुँचता है, यहीं पर पूजा के बाद विश्राम होता है, इस स्थान का नाम पहले निराली धार था। माना जाता है कि चौदहवीं शताब्दी में कन्नौज के राजा जसधवल ने यात्रा की परम्पराओं का उल्लंघन करते हुए राजजात में शामिल होकर यहाँ पर नर्तकियों से नाच करवाया था जो देवी कोप से शिला रूप हो गई, तभी से इस स्थान का नाम पातरनचौनियाँ पड़ा। इस बड़े क्षेत्र में फैले जड़ी-बूटी, फूल, ब्रह्ममकमल इत्यादि की सुगन्ध का नशा यात्रियों को महसूस होने लगता है। ऊँचाई पर सांस फूलने की परेशानी से बचने के लिए यात्रियों को अपने साथ सूखे फल, अचार, ग्लूकोस इत्यादि अवश्य रखने चाहिये। हिमाच्छादित ऊँची चोटियों के समीप इस स्थल से ऊपर की ओर आगे बढ़ने के लिए प्रत्येक यात्री अपने स्वास्थ्य की जाँच-पड़ताल विशेष तौर पर कर लेता है।



पन्द्रहवाँ पड़ाव : शिला समुद्र (५ सितम्बर)

१५ किमी० (१२००० फीट)

पातरनचौनियाँ से तेज चढ़ाई पार कर यात्रा कैलवाविनायक पहुँचती है। यहाँ पर गणेश की भव्य पाषाण मुर्ति सुशोभित है। यहाँ से नन्दा घुंघटी व त्रिशूली पर्वत के प्रत्यक्ष पददर्शन होते हैं। कैलवाविनायक में धौंसिंह, देवी की अगवाई करता है। यहाँ से उसका क्षेत्र आरम्भ होता है। बताया जाता है कि यहाँ पर कैलवा नाम का गण था, जिसे देवी ने वरदान दिया था कि राजजात में तुम्हें रवाजा (चूड़े) इत्यादि चढ़ाये जायेंगे।

कैलवाविनायक से आगे बगुवाबासा रमणीय निर्जन स्थान है जहाँ भगवती नन्दा देवी के वाहन "बाघ" का निवास होने के कारण ही इस स्थान का नाम बघुवाबासा पड़ा। यहाँ पर प्रसिद्ध इतिहासकार स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज ने धर्मशाला बनवायी थी। आगे चलकर बल्लभा स्वेल्डा (बल्लभा का प्रसूति गृह) है, यहीं पर राजा जसधवल की रानी बल्लभा को राजजात के दौरान प्रसव हुआ था जो शापित हुआ।

रूपकुण्ड (१६२०० फीट) पहुँकर यात्री हिमालय की रहस्यमयी बर्फीली झील को देखकर अपनी थकान दूर करते हैं, इस कुण्ड में आज भी चौदहवीं शताब्दी के राजा जसधवल के यात्रीदल के अस्तिपंजर पड़े हुए हैं। १६,२०० फीट की ऊँचाई पर स्थित रूपकुण्ड के चारों ओर ब्रह्ममकमल खिले दिखलायी पड़ते हैं। रूपकुण्ड से आगे ज्यूरागलीधार पूरे यात्रा मार्ग का सर्वाधिक कठिन भाग है, शिलासमुद्र पहुँचने के लिए १७५०० फीट के ऊँचे इस माउन्टेन पास को पार करना अति आवश्यक होता है। लादू देवता ने यहाँ पर राजजात के यात्रियों को पार कराने वाला टैक्स देने का प्रावधान किया था, जो आज भी लागू है। ग्लेशियर शिलाओं के समुद्रनुमा विरान स्थान शिलासमुद्र पर यात्रा रातभर पड़ाव करती है। यहाँ पर प्रातः सूर्य उदय से पहले नन्दाघुंघटी पर्वत में तीन दीपक और धूप की लौ दिखलायी पड़ती है। इस अलौकिक दृश्य को विगत यात्राओं में अनगिनत यात्रियों ने स्वयं अपनी आँखों से देखा और अनुभव किया। कई यात्री सम्पूर्ण रात देवी अराधना में व्यतीत कर देते हैं।

सौलहवाँ पड़ाव : चंदनियाघट, (नन्दानवमी ६ सितम्बर)
१६ कि०मी० (होमकुण्ड में पूजा और मेढ़े की विदाई के
पश्चात् नन्दा नवमी को चंदनियाघट में पड़ाव।)

शिलासमुद्र से प्रातः यात्रीदल होमकुण्ड के लिए रवाना होता है। शिलासमुद्र में पिण्ड तर्पण किये जाते हैं, थोड़ी दूर चलने पर घीथोपिया स्थान पर देवी ने शिला खड़ी कर रखी है, जिसके बाहर एक रेखा खींची जान पड़ती है। देवी ने थके हारे यात्रियों के मनोरंजनार्थ एक नियम बनाया कि इस शिला पर जो यात्री रेखा के बाहर खड़े होकर घी फेंकेगा और जिसका घी शिला पर नहीं चिपकेगा वह वर्णशंकर होगा। आज भी इस दृश्य को देखने पर हंसी-मखौल का माहोल उत्पन्न हो जाता है। यात्री दल होमकुण्ड पहुँचकर होमकुण्ड (यज्ञस्थल) के दर्शन करता है। पवित्रकुण्ड के यहाँ स्थित होने पर ही इस स्थान का नाम होमकुण्ड रखा गया। यहाँ पर सभी मायके वाले अपनी छतोलियों को विसर्जित कर देते हैं और ससुराल क्षेत्र की भोजपत्र से बनी छतोलियाँ व देवी डोलियाँ वापस चली आती हैं। यज्ञ होता है, चार सींग के मेढ़े, देवी और उसके साथ आये दो सौ से अधिक देवी-देवताओं की पूजा होती है। तत्पश्चात् चार सींग के मेढ़े को अनन्त कैलाश के लिए विदा किया जाता है। विदाई के इस मौके पर चार सींग के मेढ़े की आँखों से अंशुधारा गिरने लगती है, यात्रीगण भी इस दृश्य को देख अपने आँसू नहीं थाम पाते। मेढ़े पर भगवती के जेवर, भेंट, उपहार आदि सजाये होते हैं, यहाँ पर धौसिंह-भौसिंह देवता जौलधारा से पूजा के लिए कलशों पर पानी लाते हैं, तथा यहीं सुफल भी देते हैं। वाण व सुतोल गाँव के लोगों पर ही इस निर्जन यात्रा की सर्वाधिक जिम्मेदारी होती है।

होमकुण्ड में यात्रा विसर्जन के बाद यात्रीदल वापस चंदनियाघाट पहुँचता है, यह स्थान देवी के गण चंदनिया का है। घनघोर जंगल में सोने का स्थान कम होने पर लोग पेड़ों की आड़ में ही रात बिता देते हैं। होमकुण्ड में अष्टमी व नवमी की पूजन की परम्परा रही है। इस वर्ष पूजा अष्टमी नवमी के मिलान पर है जो सर्वश्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होगी।



सतरहवाँ पड़ाव : सुतोल (७ सितम्बर)

१८ किमी०, (७१६० फीट)

चंदनियाघाट से सुतोल आने के लिए रिगाल, देवदार और सुरई के घनघोर जंगल हैं इसे पार करते हुए यात्री सुतोल गाँव पहुँचते हैं, रास्ते में तातड़ा में धौसिंह का मन्दिर भी है। पाँच दिन बाद यात्रियों को गाँव और आबादी के दर्शन होते हैं। रूपगंगा और नन्दाकिनी के संगम के दाहिनी ओर बसे सुतोल गाँव के लोग यात्रियों की बड़ी आवाभगत करते हैं, यहाँ पर बधाण की राजराजेश्वरी नन्दा देवी कुरुड़ के पुजारी सभी यात्रियों को सुफल देते हैं, रातभर नृत्यगीत और गढ़वाल के सांस्कृतिक विरासत के दर्शनों से लोग प्रफुल्लित होते हैं, रास्ते की सारी थकान गायब सी हो जाती है। इसी गाँव से दूसरे दिन कुमाऊँ और बधाण के देवी-देवता और डोलियाँ कनौल, वाण होते हुए अपने-अपने मूल स्थानों को लौट जाते हैं। दशोली और पैनखण्डा के देवी-देवता भी सुतोल से अपने निश्चित मार्गों के लिए राजवंशियों से विदा लेते हैं।

अठारहवाँ पड़ाव : घाट (८ सितम्बर) २५ किमी०

सुतोल से नन्दाकिनी नदी के दाहिने किनारे चलकर सितैल में नन्दाकिनी का पुल पार कर रास्ते भर कैल, चीड़ के घनघोर जंगल मिलते हैं। सितैल में वन विभाग के विश्रामगृह में कुछ देर विश्राम कर देर सांय तक यात्रीदल घाट पहुँचता है।

उन्नीसवाँ पड़ाव : नौटी (९ सितम्बर) ६० कि०मी०

दूसरे दिन यात्रीदल घाट से बस अथवा अन्य वाहनों द्वारा नन्दप्रयाग, लंगसु में सुफल देते हुए कर्णप्रयाग पहुँचता है। कर्णप्रयाग में कोटि के ड्यूडी ब्राह्मणों द्वारा राजकुंवरों व बारह थोकी ब्राह्मणों आदि को

सुफल देकर विदा किया जाता है। कपीरी व बद्रीश पंचायत के यात्रीदल ईड़ावधाणी में सुफल देते हुए राजकुंवर और राजपुरोहित के साथ शेष यात्री सांय तक नौटी ग्राम में वापस लौट आते हैं।

नौटी में यात्रा के दौरान परमपुज्य जगतगुरु शंकराचार्य ज्योतिर्पिठाधिश्वर अन्नत श्री स्वामी माधवआक्षम जी महाराज के सौजन्य से एक सितम्बर से प्रारम्भ होने वाली श्रीमद् देवी भागवत का समापन १० सितम्बर को होगा। इसी दिन यहाँ पर भागवत की पूर्णाहुति यज्ञ, ब्रह्मभोजन होगा और राजगुरु नौटियाल राजवंशी गुरुओं को सुफल देकर काँसुआ के लिए विदा करेंगे।

राजजात में शामिल होने वाली अन्य देवी, डोलियों का कार्यक्रम

नंदादेवी कुरुड़ बधाणा

क्र.सं.	तिथि	पड़ाव
१.	२५ अगस्त	उस्तोली
२.	२६ अगस्त	भेंटी
३.	२७ अगस्त	डुंग्री
४.	२८ अगस्त	सूना
५.	२९ अगस्त	चैपडों
६.	३० अगस्त	नन्दकेसरी

(राजजात में मिलन)

दशमद्वार डोली

क्र.सं.	तिथि	पड़ाव
१.	२५ अगस्त	कंडाला
२.	२६ अगस्त	भेंटी
३.	२७ अगस्त	नंदप्रयाग
४.	२८ अगस्त	कांडई
५.	२९ अगस्त	लुंतरा
६.	३० अगस्त	रामणी
७.	३१ अगस्त	आला
८.	०१ सितम्बर	कनोल
९.	०२ सितम्बर	वाणा

(राजजात से मिलन)

नंदादेवी कुरुड़ दशोली

क्र.सं.	तिथि	पड़ाव
१.	२५ अगस्त	उस्तोली
२.	२६ अगस्त	खुनाणा
३.	२७ अगस्त	कांडई
४.	२८ अगस्त	पगना
५.	२९ अगस्त	त्वाणी
६.	३० अगस्त	सुंग
७.	३१ अगस्त	रामणी
८.	०१ सितम्बर	कनोल
९.	०२ सितम्बर	वाणा

(राजजात से मिलन)

नंदादेवी अल्मोडा

क्र.सं.	तिथि	पड़ाव
१.	२८ अगस्त	नाला
२.	२९ अगस्त	कोट
३.	३० अगस्त	नन्दकेसरी

७५ वर्षों बाद राजजात में शामिल होगी।

(उपरोक्त के अतिरिक्त अन्य डोलियाँ भी समय-समय पर राजजात यात्रा में शामिल होगी।)

श्री नन्दादेवी राज समिति द्वारा सभी श्रद्धालुओं, यात्रीयों को श्री नन्दादेवी राजजात २००० की बहुत बहुत शुभकामनाएँ।

श्री नन्दा देवी राजजात - 2000

यात्रा कार्यक्रम

दिनांक 22 अगस्त, 2000 से 9, सितम्बर, 2000 तक

उत्तराखण्ड में महाकुन्म स्तर पर आयोजित होने वाली श्री नन्दादेवी राजजात - 2000 के लिये गढ़वाल के राजवंशी कुंवर कांसुवा गांव से दिनांक 21 अगस्त, 2000 को चार सिंग के मेढ़े (खाड़ू) और पवित्र रिंगाल की राजजात छंतोली को लेकर श्री नन्दा देवी सिद्धपीठ नौटी पहुंचेंगे।

पड़ाव नं०	दिनांक	पड़ाव	कि०मी०	समुद्र तल से ऊंचाई	
		श्री नन्दादेवी राजजात-2000 का शुभारम्भ		5320 फीट	राजजात की पवित्र छंतोली
1.	22 अगस्त, 2000	नौटी से ईझ-बधाणी	10		पर प्रातः देवी
2.	23 अगस्त, 2000	ईझ-बधाणी से नौटी	10	3200 फीट	की प्राण प्रतिष्ठा
3.	24 अगस्त, 2000	नौटी से कांसुवा	10		व दिन के
4.	25 अगस्त, 2000	कांसुवा से सेम	10		1230 बजे
5.	26 अगस्त, 2000	सेम से बंटी	10		प्रस्थान।
6.	27 अगस्त, 2000	कोटी से भगोली	12		
7.	28 अगस्त, 2000	भगोली से कुलसारी	12		
8.	29 अगस्त, 2000	कुलसारी से पैपड़ों	10		
9.	30 अगस्त, 2000	पैपड़ों से नंदकोसरी	05		
10.	31 अगस्त, 2000	नंदकोसरी से फन्दिगागांव	10		
11.	01 सितम्बर, 2000	फन्दिगागांव से मुदोली	10	4440 फीट	होमकुण्ड में
12.	02 सितम्बर, 2000	मुदोली से घाणा	15	7000 फीट	11-30 बजे
13.	03 सितम्बर, 2000	घाणा से गैरोली पाताल	10		यज्ञ। पूजा के
14.	04 सितम्बर, 2000	गैरोली पाताल से पातर नक्षीय्या	12		बाद धौसिंगिया
15.	05 सितम्बर, 2000	पातर नक्षीय्या से शिलासमुद्र	15	17500 फीट	खाड़ू की विदाई
16.	06 सितम्बर, 2000	शिलासमुद्र से होमकुण्ड चंदनिकाघट	16	16000 फीट	राज छंतोली
17.	07 सितम्बर, 2000	चंदनिकाघट से सुतोल	18		सहित सभी
18.	08 सितम्बर, 2000	सुतोल से घाट	25	7190 फीट	छंतोलियों का
19.	09 सितम्बर, 2000	घाट से नौटी (वाहन छात्र)	70	4365 फीट	विसर्जन।
	कुल पड़ाव 19	कुल दूरी - 290 कि० मी०			

श्री नन्दादेवी राजजात के दौरान श्री नन्दादेवी शक्तिपीठ नौटी में दिनांक 1 सितम्बर, 2000 से श्रीमद् देवी भागवत कथा नवाह यज्ञ प्रारम्भ होकर दिनांक 10 सितम्बर, 2000 को कथा पूर्णाहुति एवं ब्राह्मण भोज प्रसाद वितरण के बाद राजवंशियों को राजगुरुओं द्वारा सुफल देकर कांसुवा के लिये विदा किया जायेगा।

कृपया पुस्तक एवं यात्रा कार्य के लिए सम्पर्क करें।

1. नुवन नौटियाल, महामन्त्री श्री नन्दादेवी राजजात समिति, नौटी
2. राज दुक डिपो, गोपेश्वर, जिला चमोली, उ०प्र० फोन : 01372-52294
3. टी० वी० भिरदूत, 82 कृष्ण नगर, देहरादून - 248001 फोन : 0135-754157
4. शिविर कार्यक्रम - कार्णप्रयाग (चमोली) उ० प्र० द्वारा प्रकाशित एवं प्रचारित। फोन : 01363-44257

सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक— हिमालय का महाकुम्भ
श्री नन्दादेवी राजजात—२०००

स्व० श्री देवराम नौटियाल
के लेखों पर
आधारित ऐतिहासिक कथा

प्रकाशन : सं० २००० जुलाई

संरक्षक : कुंवर बलवन्त सिंह
अध्यक्ष, नन्दादेवी राजजात केन्द्रीय समिति

ऐतिहासिक लेखों का सहयोग
भुवन नौटियाल
महासचिव, राजजात केन्द्रीय समिति

—सम्पादक मंडल—
शिव कुमार पैन्थूली
डॉ. अनुसुइया प्रसाद मैखुरी
डॉ. भगवती प्रसाद पुरोहित

संकल्पना, व्यवस्थापन, प्रतीक चिन्ह एवं मुख्य पृष्ठ चित्र
शिव कुमार पैन्थूली

कम्प्यूटर कम्पोजिंग एवं मोनोग्राम
टी.वी. गिरिदूत, देहरादून।

व्यवस्थापन सहयोग
विष्णु कुमार पैन्थूली

सहयोग राशि
पेपर बैक पर मात्र.....रुपया २० प्रति कॉपी

प्राप्ति स्थान
राज बुक डिपो, बस स्टेशन गोपेश्वर चमोली
०१३७२-५२२६४

प्रकाशक एवं सर्वाधिकार
हिमालय पीस फाउण्डेशन, गोपेश्वर, चमोली, उत्तरांचल (उ०प्र०)
०१३७२-५२६७८, ५२५६५

नन्दादेवी राजजात २००० की विस्तृत जानकारी इन्टरनेट पर उपलब्ध है।

उड्ड्यू उड्ड्यू उड्ड्यू हिमालयनयात्रा डॉट कॉम
www.himalayanyatra.com